राजप्रश्नीयसूत्रम् (फोल्डर नंबर ००१२४३)

मुख्य टाइटल
समर्पण ---५
प्रकाशकीय--७
आदि वचन---८
विषयानुक्रमणिका -- १२
प्रस्तावना --- १५
श्री आगम प्रकाशन समिति ब्यावर -- ४०
आरम्भ --३
चैत्य-वर्णन --६
राजा सेय---८
रानी धारिणी --९
भगवान् का पदार्पण और राजा का दर्शनार्थ गमन -- १०
सूर्याभदेव द्वारा जम्बूद्वीपदर्शन -- ११
सूर्याभदेव द्वारा भगवान् की स्तुति-- १३
सूर्याभदेव की आभियोगिक देवों की आज्ञा-- १४
आभियोगिक देवों द्वारा आज्ञापालन-- १७
संवर्तक वायु की विकुर्वणा--- १९
अभ्र बादलों की विकुर्वणा -- २०
पुष्प-मेघों की रचना -- २०
आभियोगिक देवों का प्रत्यावर्तन--- २१
सूर्याभदेव की उद्घोषणा एवं आदेश--- २२
सूर्याभदेव की उद्घोषणा की प्रतिक्रिया--- २४
सूर्याभदेव द्वारा विमाननिर्माण का आदेश -- २४
आभियोगिक देवों द्वारा विमान-रचना-- २६
मणियों का वर्ण-- २८
मणियों का गंध-वर्णन--- ३०
मणियों का स्पर्श -- ३१
प्रेक्षागृह-निर्माण -- ३२
रंगमंच आदि की रचना--- ३३
सिंहासन की रचना -- ३३
सिंहासन की चतुर्दिग्वर्ती भद्रासन-रचना-- ३५
समग्र यान-विमान का सौन्दर्य-वर्णन-- ३५
आभियोगिक देव द्वारा आज्ञा-पूर्ति की सूचना--- ३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेव का आमलकल्पा नगरी की ओर प्रस्थान ---------- ३८
सूर्याभदेव का समवसरण में आगमन ---------- ४०
सूर्याभदेव की जिज्ञासा का समाधान ---------- ४४
सूर्याभदेव द्वारा मनोभावना का निवेदन ---------- ४५
वाद्यों और वाद्यवादकों की रचना ---------- ४८
सूर्याभदेव द्वारा नृत्य-गान-वादन का आदेश ---------- ४९
नृत्य-गान आदि का रूपक ---------- ५१
नाट्याभिनयों का प्रदर्शन ---------- ५२
भगवान् महावीर के जीवन-प्रसगों का अभिनय ---------- ५७
नाट्याभिनय का उपसंहार ---------- ५८
गौतमस्वामी की जिज्ञासा-भगवान का समाधान ---------- ६०
सूर्याभदेव के विमान का अवस्थान और वर्णन ---------- ६१
सूर्याभविमान के द्वारों का वर्णन ---------- ६३
द्वारस्थित पुतलियां ---------- ६६
द्वारों के उभय पार्श्ववर्ती तोरण ---------- ७०
द्वारस्थ ध्वजाओं का वर्णन ---------- ७४
द्वारवर्ती भौमों (विशिष्ट स्थानों) का वर्णन ---------- ७४
विमान के वनखण्डों का वर्णन ---------- ७५
मणियों और तृणों की ध्वनियाँ ---------- ७६
वनखंडवर्ती वापिकाओं आदि का वर्णन ---------- ७८
उत्पात पर्वतों आदि की शोभा ---------- ८०
वनखंडवर्ती गृहों का वर्णन ---------- ८१
वनखंडवर्ती मंडपों का वर्णन ---------- ८१
वनखण्डनवर्ती प्रासादवतंसक ---------- ८२
उपकारिकालयन का वर्णन ---------- ८५
पद्मवरवेदिका का वर्णन ---------- ८५
मुख्य प्रासादावतंसक का वर्णन ---------- ९०
सुधर्मा सभा का वर्णन ---------- ९१
स्तूप वर्णन ---------- ९३
चैत्यवृक्ष ---------- ९४
माहेन्द्र-ध्वज ---------- ९५
सुधर्मासभावर्ती मनोगुलिकायें, गोमानसिकायें ---------- ९६
माणवक चैत्य स्तम्भ ---------- ९७
देवशय्या ---------- ९८
आयुधगृह-शस्त्रागार ---------- ९९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धायतन ---------- ९९
उपपात आदि सभाएं---------- १०२
पुस्तकरत्न एवं नन्दापुष्करिणी---------- १०३
उपपातानन्तर सूर्याभदेव का चिन्तन ---------- १०४
सामानिक देवों द्वारा कृत्य-संकेत---------- १०५
सूर्याभदेव का अभिषेक-महोत्सव ---------- १०७
अभिषेककालीन देवोल्लास ---------- १११
अभिषेकानंतर सूर्याभदेव का अलंकरण ---------- ११५
सूर्याभदेव द्वारा कार्यनिश्चय---------- ११६
सिद्धायतन का प्रमार्जन ---------- ११७
अरिहंत-सिद्ध भगवन्तों की स्तुति---------- ११८
सूर्याभदेव द्वारा सिद्धायतन के देवच्छन्दक आदि की प्रमार्जना---------- ११९
आभियोगिक देवों द्वारा आज्ञापालन---------- १२५
सूर्याभदेव का सभा-वैभव---------- १२६
सूर्याभदेव विषयक गौतम की जिज्ञासा---------- १२७
केकय अर्ध जनपद और प्रदेशी राजा ---------- १२८
रानी सूर्यकान्ता और युवराज सूर्यकान्त---------- १३१
चित्त सारथी ---------- १३१
कुणाला जनपद, श्रावस्ती नगरी, जितशत्रु राजा ---------- १३२
चित्तसारथी का श्रावस्ती की ओर प्रयाण ---------- १३३
श्रावस्ती नगरी में केशी कुमारश्रमण का पदार्पण ---------- १३६
दर्शनार्थ परिषदा का गमन और चित्त की जिज्ञासा ---------- १३८
चित्त सारथी का दर्शनार्थ गमन ---------- १४०
केशी श्रमण की देशना ---------- १४१
चित्त की केशी कुमारश्रमण से सेयविया पधारने की प्रार्थना ---------- १४५
केशीकुमार श्रमण का उत्तर ---------- १४७
प्रदेशी राजा को लाने हेतु चित्त की मुक्ति ---------- १५६
केशी कुमारश्रमण को देखकर प्रदेशी का चिन्तन ---------- १५८
तज्जीव-तच्छरीरवाद मंडन-खंडन---------- १६७
प्रदेशी की परंपरागत मान्यता का निराकरण ---------- १९३
प्रदेशी की प्रतिक्रिया एवं श्रावकधर्म-ग्रहण---------- १९७
प्रदेशी द्वारा कृत राज्यव्यवस्था---------- २०१
सूर्यकान्ता रानी का षड्यंत्र ---------- २०२
प्रदेशी का संलेखना-मरण ---------- २०३
सूर्याभदेव का भावी जन्म---------- २०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माता-पिता द्वारा कृत जन्मादि संस्कार--२०५
दृढप्रतिज्ञ का लालन-पालन---२०७
दृढप्रतिज्ञ का कलाशिक्षण--२०७
कलाचार्य का सम्मान --२०९
दृढप्रतिज्ञ की भोगसमर्थता---२०९
दृढप्रतिज्ञ की अनासक्ति ---२११
उपसंहार ---२१३
परिशिष्ट-१ – नृत्य-संगीत-नाट्य-वाद्य से सम्बन्धित शब्दसूची ---२१४
परिशिष्ट-२ – विशिष्ट शब्दों की अनुक्रमणिका---२१९
अनध्ययकाल---२३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org